ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 180-182**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

आधुनिकीकरण की अवधारणा एवं परिणाम

डॉ0 कविता कुमारी
मो0– गौरक्षणी, पो0 + थाना + जिला, जहानाबाद (बिहार) भारत

Received-16.05.2025, Revised-23.05.2025, Accepted-30.05.2025 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् हुआ। यह अवधारणा विद्वानों एवं समाज–वैज्ञानिकों के लिए अनुसंधान एवं वाद–विवाद का विषय रहा है। आधुनिकीकरण अंग्रेजी शब्द 'मार्डनाइजेशन' का अनुवाद है। अंग्रेजी का यह शब्द लैटिन भाषा के मोडो (Modo) शब्द से व्युत्पन्न है। 'मोडो' का अर्थ है रीति। आधुनिकीकरण का अर्थ है मनुष्य द्वारा अपने प्राचीन काल से प्रचलित मूल्यों, परम्पराओं एवं मान्यताओं को ग्रहण करना। दूसरे शब्दों में आधुनिकीकरण के अन्तर्गत प्राचीन विचारों के स्थान पर नूतन विचारों को पुरातन मूल अवधारणाओं से सम्बद्ध किया जाता है। अतः आधुनिकीकरण का अभिप्राय विभिन्न प्रकार के होने वाले परिवर्तनों से है। आधुनिकीकरण एक नये प्रकार से उत्पन्न मानसिक उपज की वह नूतन दशा है जिसमें जन–समुदाय यंत्रों एवं नवीन तकनीकी के प्रयाग के लिए तत्पर रहता है तथा नये ढंग से सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना करता है।

कुंजीभूत शब्द– आधुनिकीकरण, द्वितीय महायुद्ध, समाज–वैज्ञानिक, अनुसंधान, वाद–विवाद, मार्डनाइजेशन, नूतन विचार

आधुनिकीकरण विश्व के लगभग सभी विकासशील देशों में हो रहा है। यह आर्थिक विकास से भी सम्बद्ध है। आधुनिकीरण का प्रारम्भ पश्चिम में यूरोपीय समाज से हुआ है। जिन परिस्थितियों में इन्हें जन्म दिया, वे आज विश्वव्यापी बन गयी है। इस प्रक्रिया की तीव्रता का स्तर भिन्न–भिन्न है, जिसके फलस्वरूप किसी देश को विकसित तथा किसी को अविकसित कहा जाता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् अत्यन्त तीव्र हुई है, क्योंकि इस युद्ध के पश्चात् एक–एक करके अनेक परतन्त्र देश स्वतंत्र एवं आधुनकीकरण की ओर अग्रसर होते गये। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया किसी एक ही देश या क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन को प्रकट नहीं करती, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया मूल्यों से सीमाबद्ध नहीं है, परन्तु इसका अर्थ गुणात्मक इच्छित परिवर्तन से लिया जाता है। आज विश्व का सम्पूर्ण समाज आधुनिक होता जा रहा है। शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं सामाजिक गतिशीलता आधुनिकीकरण के प्रेरणा–स्त्रोत हैं।

आधुनिकीकरण की व्यवस्था अनेक समाज–वैज्ञानिकों ने उसकी विशेषताओं के आधार पर की है। सम्बन्ध में होरोविड्स इरविंग लूइस का विचार है कि, ''आधुनिकीकरण की अवधारणा उन विशेषताओं को स्पष्ट करती है, जिनका प्राचीन काल में अभाव रहा है। इसके अन्तर्गत प्राचीन विचारों के स्थान पर नवीन विचारों को सापेक्ष रूप में मूल अवधारणाओं से जोड़ा जाता है।[1]

जैसे–जैसे ज्ञान का विकास होता गया, समाज–वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण की अवधारणा को भिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया। आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक संरचना भी रूपान्तरित होती है। इसके अन्तर्गत योजनाबद्ध रूप से निश्चित दिशा में परिवर्तन के सन्दर्भ में विचार किया जाता है।

आधुनिकीकरण का अध्ययन अनेक आधारों पर किया गया है। इन्क्लेस[2] ने व्यक्ति को आधार मानकर इसका अध्ययन किया। अनय विद्वानों ने आधुनिकीकरण की विश्लेषण धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक आधार पर किया है। इनमें लरनर[3](1956), ऐस्टाड[4] (1966), स्मिथ[5] (1965), लोवी[6] (1966), आप्टर[7](1965–1968), श्रीनिवास[8] (1966), सिगर[9] (1966), रूडाल्फ और रूडाल्फ[10] आदि प्रमुख हैं।

मिल्टन सिंगर[11] ने आधुनिकीकरण की व्याख्या परम्परा के विरोध के रूप में किया है। इनके अनुसार प्रत्येक विकार, मनोवृत्ति और व्यवहार, परम्परावाद में आधुनिकता की प्रक्रिया में प्रगति का सोपान है। मिल्टन सिंगर[12] की मान्यता है कि आधुनिकीकरण का विचार एक निरपेक्ष अवधारणा नहीं है, वरन् इसका प्रयोग सदैव परम्परा विरोध के सापेक्ष रूप में किया जाता है। पूर्ण आधुनिकीकरण या पूर्ण परम्परावादी दृष्टिकोण केवल कल्पनामात्र उपागम है। अतः सिंगर ने आधुनिकता बनाम परम्परा को आधुनिकीकरण की अपेक्षा अधिक उपयुक्त माना है।[13] वह आश्वस्त थे कि परम्परा एवं आधुनिकता के मध्य विभाजन में चाहे वह प्रचलित पाश्चात्य भौतिकवादी अति प्राचीन अध्यात्मवाद के रूप में ही अथवा परम्परागत अति आधुनिक समाजों के अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक के रूप में हो, इनके अनुसार परम्परा तथा आधुनिकता के मध्य सह–अस्तित्व विद्यमान रहती है।

अतः सिंगर[14] के विचार में अधिकतर लोग दो प्रकार के समाज में जुड़े हैं, परम्परागत एवं आधुनिक समाज। वास्तव में अधिकांश लोग आधुनिकता का प्रयोग केवल व्यवसायिक कार्यों के सन्दर्भ में करते हैं। इसके विपरीत वे धार्मिक मूल्यों, पारिवारिक सम्बन्धों, व्यवहारों एवं अभिवृत्तियों आदि जीवन के अन्य क्षेत्रों एवं कार्यकलापों में जब तक परम्परावादी होते हैं, तब तक कि उनका कोई व्यक्तिगत हित अथवा परिस्थितिकीय मंतवय नहीं होता। उनके लिए कतिपय आधुनिक गुणों को स्वीकार करना सरल होता है, फिर भी पूर्ण रूप से आधुनिकता के प्रभाव में आने में वर्षों लग जाता है।[15]

श्रीनिवास ने आधुनिकीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, ''किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सम्पर्क के कारण किसी विकासशील देशों में होने वाले परिवर्तनों के लिए प्रचलित शब्द आधुनिकीकरण है।[16]'' श्रीनिवास ने औद्योगिकरण एवं पश्चिमीकरण के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, ''आधुनिकीरण से भिन्न पश्चिमीकरण शब्द नैतिक दृष्टि से तटस्थ है। इसमें सत्–असत् का आभास नहीं मिलता, परन्तु आधुनिकीकरण में उत्कृष्टता का अर्थ सन्निहित है।[17]

'पश्चिमीकरण' जिसे वह आधुनिकीकरण के पर्याय के रूप में प्रयुक्त करते हैं, सदैव कतिपय मूल्य अभिमानों की उपलक्षित करता है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मूल्य अनेक अन्य मूल्यों का सन्निवेश होता है, स्थूल रूप से मानवतावादी मूल्य के रूप में अभिलक्षित किया जा सकता है। इसका तात्पर्य आर्थिक स्थिति धर्म, आयु, लिंग आदि से निरपेक्ष समस्त मानव–जाति का कल्याण है।

श्रीनिवास[18] के अनुसार संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण की अत्यावश्यक प्रारम्भिक प्रक्रिया है। आज ब्राह्मण अधिकारिक पश्चिमीकृत होते जा रहे हैं। ब्राह्मण जिन प्रथाओं का परित्याग कर रहे हैं, उन्हें जाति–संस्तरण में निम्न कोटि की जातियाँ अंगीकृत कर रही है। इस प्रकार निम्न जातियाँ ही संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में हैं। जहाँ तक इन जातियों का सम्बन्ध है, ऐसा प्रतीत होता है कि मानो संस्कृतिकरण, की परमावश्यक प्रारम्भिक तैयरी है। इस प्रकार संस्कृतिकरण केवल निम्न जातियों तक सीमित है तथा आधुनिकीकरण

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

का सम्बन्ध केवल उच्च जातियों से है। इनके अनुसार निम्न जातियों द्वारा अंगीकृत समस्त व्यवहारों में ब्राह्मणों का ही अनुकरण है जिसे उन्होंने संस्कृतिकरण की संज्ञा दी है। संस्कृतिकरण की प्रारम्भिक तैयारी के अभाव में वे आधुनिक नहीं बन सकते।

प्रो0 श्यामचरण दूबे[19] का मत है कि आधुनिकरण मात्र अन्धानुकरण है, जबकि आधुनिकीकरण का एक आधार है, जिस पर वह अपनी विशिष्टता प्रतिधारित करता है। अनुकरण एवं आधुनिकीकरण में एक गुणात्मक अन्तर है। आधुनिकीकरण का तात्पर्य केवल अधिक विकसित देशों के वियुक्त विशेषताओं, तत्वों अथवा संलक्षणों का पृष्ठीय अर्जन अथवा अंगीकरण नहीं है, वरन् उनका एक अधिक तर्क–संगत क्रम में चयन करके मौलिक सांस्कृतिक प्रतिमान के साथ सुसंगठित एकीकरण है। विलफ्रेड, केन्टबेल का भी ऐसा ही मत है। उनके अनुसार, ''विकसित देशों से उद्घृत करने की तकनीक आधुनिक होने की सम्भावित आकांक्षा प्रदर्शित कर सकता है, परन्तु यह आधुनिकीकरण का मूल तत्व नहीं है। आधुनिकतावाद जो आधुनिकीकरण प्रक्रिया का अर्थ है, एक मानसिक अभिवृत्ति है, न कि कोई पदार्थ जिसे क्रय–विक्रय किया जा सके। आधुनिकतावाद अंगीकरण नही, वरन् करना एवं होना है। केवल होना भी नही, अपितु होते रहना, एक प्रक्रया, एक दिगवन्यास, एक अनुकूलन, एक गत्यात्मकता है।[20]''

पाई[21] के अनुसार, ''आधुनिकीकरण वह दशा है जिसमें यंत्रों तथा प्रतिविधयों के उपयोग के लिए एक नयी पृष्ठभूमि का निर्माण होता है और सामाजिक सम्बन्धों का एक नया प्रारूप बनता है।''

डेनियल लर्नर[22] के अनुसार, ''आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्था तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं को परिलक्षित करने वाली एक उद्वेगजनक भावना निहित रहती है। परन्तु आधुनिकीकरण हेतु मात्र प्रेरणात्मक भावना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु संचार–व्यवस्था में क्रान्ति की भी आवश्यकता है।''

बर्जर आधुनिकीकरण को एक ऐसी मनोदशा के रूप में स्वीकार करते हैं जिसमें प्रगति की अपेक्षा विकास के पथ पर अग्रसर होने की प्रवृत्ति तथा परिवर्तनों में सामंजस्य स्थापित करने में तत्परता का समावेश हो।

प्रो0 योगेन्द्र सिंह के अनुसार, ''आधुनिकीकरण संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक मूल्य के मध्य एकीकरण की एक प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण का विश्लेषण संरचनात्मक आधार पर भूमिका एवं भूमिकाओं के समुच्चय के रूप में तथा सांस्कृतिक आधार पर मूल्यों एवं आदर्शों के रूप में किया जा सकता है। आधुनिकीकरण का विकास इसके सम्बन्धों संरचानाओं में परिलक्षित आदर्शों के अन्तरीकरण द्वारा होता है[23]।

आधुनिक व्यक्तियों की कुछ विशेषताएँ[24]

1. नवीन अनुभवों के प्रति खुलापन।
2. सामाजिक परिवर्तनों के लिए तत्परता।

इन दोनों की व्याख्या मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से की गयी है। इसके अन्तर्गत आधुनिक मानव की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है–

1. नवीन परिस्थितियों को अपनाने की तत्परता।
2. समाजिक परिवर्तन के लिए तत्परता।
3. आस–पास के पर्यावरण के प्रति सचेष्टता।
4. वर्तमान तथा भविष्य के प्रति जागरूकता।
5. तर्कयुक्त संसार के प्रति विश्वास।
6. लक्ष्य–प्राप्ति हेतु स्वयं की कर्त्तव्यनिष्ठा के प्रति आस्था।
7. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रति संज्ञानता।
8. न्यायिक विभाजन के प्रति विश्वसनीयता।
9. परिश्रम के प्रति लगाव।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आधुनिक मानव को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण का होना चाहिए तथा अपने पय्यवरण एवं प्रकृति के रहस्य के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और उसे अपनी इच्छा से सामाजिक एवं राजनैतिक क्रिया–कलाप में भां लेना चाहिए।

कोई भी समाज न तो पूर्णतया परम्परागत है और न ही पूर्णतया गतिशील। स्थिरता और गतिशीलता की अवधारणा सापेक्षिक है। आधुनिकता को समझने के लिए परम्परा को भी जानना आवश्यक है। परम्परा के ज्ञान के अभाव में आधुनिकता को व्यक्त नहीं किया जा सकता है। जिन समाजों को हम आधुनिक कहते हैं, उन समाजों में भी कुछ परम्परायें होती हैं जो लोगों के व्यवहारों का निर्देशन करती हैं। परम्परा का अर्थ है पुरानी पीढ़ी या पूर्वजों के व्यवहारों की निरन्तरता। परम्परा समाज की निरन्तरता का द्योतक है। ऐसा परिवर्तन जो इच्छाई के लिए हो। अतः परम्परा समाज की निरन्तरता को व्यक्त करती है, जबकि आधुनिकता परिवर्तन को इंगित करती है। आधुनिकता एवं परम्परा एक–दूसरे के पूरक हैं।

आधुनिकीकरण के लक्षण– किसी भी समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया क्रियाशील है या नहीं, इसका अनुमान निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर लगाया जा सकता है–

(1) औद्योगीकरण (2) नगरीकरण (3) प्रौद्योगिकीय प्रगति (4) विज्ञान मे प्रगति (5) सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि (6) सामाजिक विभेदीकरण (7) परम्परागत मूल्यों तथा आदेशों में परिवर्तन (8) धर्म का घटता हुआ महत्व (9) आर्थिक संगठन एवं वयवस्था में नवीन परिवर्तन (10) राज्य के कल्याणकारी कार्यों का विस्तार (11) भौतिक संस्कृति का विकास तथा प्रसार (12) समानता व स्वतंत्रता की धारणा का विस्तार (13) शिक्षा का प्रसार (14) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहयोग व आदान–प्रदान की प्रक्रया में विस्तार।

लर्नर (1962–1965),[25] आलमंड और कोलमैन (1960),[26] मैकवलेलैंड (1963)[27] आधुनिकीकरण की व्याख्या बौद्धिक स्तर पर किया है। लर्नर ने आधुनिकीकरण का परिश्चमी प्रतिभाग स्वीकार किया है। वे आधुनिकीकरण में निहित निम्नलिखित लक्षणों का उल्लेख करते हैं :

1. बढ़ता हुआ नगरीकरण
2. बढ़ती हुई साक्षरता
3. बढ़ती हुई साक्षरता, विभिन्न साधनों, जैसे :– समाचार–पत्र, पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन आदि के प्रयोग।
4. इन सभी से व्यक्ति के कार्य–क्षमता में वृ0 होती है। जो व्यक्ति के आय को बढ़ाती है।

5. यह राजनैतिक जीवन की विशेषताओं को उन्नत करने में सहायक है।

श्री दूबे[28] ने आधुनिकता के निम्नलिखित लक्षण बताये हैं :

(1) परानुभूति (2) गतिशीलता (3) उच्च सहभागिता (4) अभिरुचि की स्पष्टता (5) हितों का एकत्रीकरण (6) संस्थागत राजनैतिक प्रतियोगिता (7) तार्किक साधना एवं साध्य का पूर्व आकलन (8) उपलब्धियों का अनुकूलन (9) समृद्धि कार्य बचत तथा जोखिम के प्रति नवीन अभिवृत्ति (10) सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक अनुशासन।

आप्टर[29] ने इसके लिए तीन दशाओं का निरूपण किया है जिसमें एक सामाजिक व्यवस्था बिना विघटन के सतत नवीन परिवर्तन घटित होते रहे विभेदीकरण, सुसभ्य सामाजिक संरचना, सामाजिक संरचना तथा एक तकनीकी दृष्टिकोण से विकसित संसार में जीवन–यापन हेतु आवश्यक कौशल तथा ज्ञान प्राप्त करने वाली सामाजिक ढाँचा।

आप्टर के अनुसार आधुनिकीकरण के लक्षण के रूप मे मूल्यों अथवा विशिष्टताओं को सूचीबद्ध करने के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि सम्पूर्ण प्रक्रिया में उनकी सापेक्षिक भूमिका का निरूपण किया जाय।

आधुनिकीकरण की भूमिका– आइजनस्टैंड[30] ने आधुनिकीकरण को निम्न प्रकार से व्यक्ति किया है :

1. आधुनिकीकरण ने आर्थिक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के उच्च स्तर को बढ़ाया है।
2. समूह में शक्ति का प्रसार तथा सभी वयस्कों को शक्ति प्रदान करना एवं संचार के साधनों द्वारा प्रजातंत्र में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया है।
3. विभिन्न समाजों के साथ अनुकूलन की क्षमता में वृद्धि की तथा दूसरे लोगों का परिस्थितियों के प्रति परानुभूति में वृद्धि की है।
4. संरचनात्मक क्षेत्र में संगठनों के आकार को विस्तृत किया है, उनमें जटिलता एवं विभेदीकरण दृष्टि से वृद्धि की है।
5. आधुनिकीकरण ने परिस्थितिकीय क्षेत्र में नगरसंस्करण में वृद्धि किया है।

डॉ0 एम0एन0 श्रीनिवास[31] ने आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें बतायी हैं:

1. आधुनिकीकरण ने भौतिक संस्कृति के क्षेत्र में वृद्धि की है, साथ ही तकनीकी ज्ञान एवं वस्तुओं में भी वृ0 हुई है।
2. सामाजिक संस्थाओं में वृद्धि हुई है।
3. ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृतियों के क्षेत्र में विस्तार हुआ है।

बाह्य तौर पर ये तीनों भिन्न–भिन्न मालूम पड़ते हैं, परन्तु ये परस्पर सम्बन्धित हैं। एक क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन दूसरे को भी प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Horowitz.Irvig Louls : Three Worlds of Development, Hewyirk, Oxford University Press, 1966
2. Inkeles Alex, Making Men Modern : On the causes and consequences of individual change in six developing countries, Aerican jouranal of Sociometry, Vol. 29, 1969, PP. 253-377.
3. Lemer Daniel, The Passing of Traditional Soiety : Modernising the Middle Eaest, Glenco Ill, The Free Press, 1958.
4. Elestadt, S.H. Modernisation : Protest and Change (Modernisation of Traditional Society Series, Prentic Hall of India Co. Engle Wood Left, 1966).
5. Smith, E. American youth Culture, Glenco, the free Press, 1962.
6. Levy, M.J., Modernisation and The Stucture of Society, Prinston University Press, 1966.
7. Apter David E., The Policies of Modernisation on Chicago, The university of Chicago Press, 1965.
8. Sriniwas, M.N. Social Change in modern India, University of California Press, Berkely Los Angles, 1971.
9. Singer Militon, Traditional India Structure and Change, Jaipur, Rawat Publications. 1975.
10. Rudotph and Rudotph, The Modernisation of Tradition, Bombay Orient Long Mans Ltd. 1969.
11. Singer Militon, Structure and Change in Indian Society (Cd.) Milton Singer and B.S. Cohn, Chicago, Aldine Publication. 1968.
12. Ibid
13. Ibid
14. Ibid
15. Ibid
16. Sriniwas, M.N. Op, clt.
17. Ibid, P. 48
18. Sriniwas, M.N., Caste in Modern India and Other Essays Bombay, Asia Publishing House, 1968, P/ 54.
19. Dube, S.C., Contemporary India and its Modernisation, Delhi Vikas Publishing House, Delhi, 1974.
20. Smith, W.C. : Modernisation of the Traditional Society, Bombay Asia Publishing
21. A.E. Pye : Towards a Communication, Theory of Modernisation, P. 329.
22. Lerner, Daniel. Op, Cit.
23. Singh yuogendra, Essay on Modernisation in India, Delhi, Manohar Book Service, 1976, P. 76.
24. Ibid, P, 20.
25. Lerner
26. Almond and Colman : The Policies of Developing Areas, Prinston University, New Jersy, 1960
27. Mc-Meclland David Cand Alkinson, J.Mc. and others, The achievement motives, Application Century Corfts, New York, 1953.
28. Dube, S.C., Op. Cit.
29. Apter David E., The polites of Modernization, Chicago, The University of Chicago Press, Chicago, 1965.
30. Eisenstadt, Modemisation : Protest and Change, 1966.
31. Sriniwas M.N. : The Social Change in Modern India, 1966 and Modernisation, A Few Queries, 1969.

*****